ईश्वरने देखा, दुनिया में सारे लोग ईश्वर की भक्ति तो सही ढंग से करते हैं. मगर वह एक दूसरे के साथ आदर और प्रेम से ना रहते हुए; छल और कपटसे रहते हैं. ईश्वर को बुरा लगा. कोई उनके कृति की इज्जत नहीं करते उसे दर्द देते हैं. उन्होंने कुछ सोचा, फिर एक दिन

## मंदिर से ईश्वर गायब हुए

सुबह उठकर छोटू (पुजारी का बेटा) मंदिर में गया, तो उसने देखा ईश्वरकी मूर्ति जगह पर नहीं है. उसने पिताजी को बुलाकर जोरसे कहा कि ईश्वर मंदिर में नहीं है उसके पिताजी जो मंदिर के पुजारी थे वही डरकर भागकर मंदिर में आए. उनको आश्चर्य लगा. उन्होंने इस घटना की जानकारी गांव के मुखिया को दे दी. गांव में सारी जगह हो ईश्वर को ढूंढने की कोशिश होने लगी. घर में कोई भी नहीं रहा. सारे गांवमें इधर-उधर ईश्वर को ढूंढने लगे. घर में सिर्फ जो बुजुर्ग बीमार थे, वहीं रह गए.

जो बाहर थे घूम रहे थे ईश्वर को ढूंढ रहे थे उन्होंने खेती, कुंआ और गोशाला सभी जगह ईश्वर को ढूंढा. लेकिन ईश्वर किसी को मिले नहीं. घर में बीमार-बुजुर्ग लोग रहे, उनके पास देखने के लिए कोई नहीं था. उनको दवाई देनेके लिएभी कोई नहीं था. छोटे-छोटे एकदम नन्हे बच्चे घरमें रो रहे थे, उनकी और ध्यान देने के लिए कोई नहीं था.

एक घर में एक बुजुर्गको हिचकी आई. हिचकी आई तो वह पानी लेने के लिए उठा. उसको उठनेके लिए ताकत नहीं थी. फिरभी वह मुश्किलसे उठा और फिर नीचे गिर गया. उसको उठानेके लिए कोई नहीं था. उसी समय उसका छोटा पोता घर आया. उसने देखा दादाजी गिर गए हैं. उसने दादाजीको उठाया. बिस्तरपर लिटाया और उनको चद्दर दे दी, पानी दिया, तेल लगाया और फिर वह वापस निकल गया.

यहां गांव में सभी जन ईश्वरको ढूंढ रहे थे. सूरज ढलने की घड़ी आ गई; लोगों ने सोचा दिन के उजियाले में अगर ईश्वर नहीं मिले तो रात के अंधेरे में कैसे मिलेंगे? इसलिए लोग घर जाने लगे. घर में आते ही सब लोग ईश्वर के गायब होने के बारे में चर्चा कर रहे थे. उस बूढ़े आदमी ने दोपहर की बात अपने बच्चों से कह दियी. बच्चे को बहुत हैरानी हुई. बच्चों ने कहा उसका बेटा हर पल उसी के साथ था. वह कहीं गया भी नहीं. फिर घर में कौन आया था?

एक दिन सड़क पर एक बच्चा रो रहा था. उसको ना देखते हुए लोग ईश्वर को ढूंढ रहे थे. एक बड़े बच्चों ने उसे उठाया और उसके माँ को ढूंढ कर उसके माँके हाथ में उसे बच्चों को दे दिया. उस बड़े बच्चों के माता-पिता को भी पता चला कि उनका बच्चा उन्हीं के साथ था; फिर वह छोटे बच्चे को उठाने वाला कौन था?

उसके बाद कुछ दिन तक लोगोंको कुछ लोग दो-दो जगह एक ही वक्तमें दिखाई दिए. लोग समझ गए, यह ईश्वर का चमत्कार है. ईश्वर ही इंसानका रूप लेकर, एक दूसरे इंसानको मदद करता है. अब सारे लोग एकदूसरे से डरने लगे, क्या पता सामने वाला अगर ईश्वर हो तो?

शायद सामने वाला ईश्वर हो सकता है, ऐसा सोचकर सारे लोग एक दूसरे से अच्छा व्यवहार करने लगे.

उस गांव के लोग सुधर गए. ऐसा देखकर ईश्वर वापस मूर्ति रूप में मंदिर में विराजमान हो गए मूर्ति रूप में विराजमान होकर मंदिर में रहने गए.